जुलाई २०२३
अंक १७

ज्ञानोदय प्रभा

सम्पादकीय

चरैवेति चरैवेति -----

वेदों की सुन्दर पंक्ति है – 'चरैवेति चरैवेति' | जीवन चलने का नाम ही है | जो व्यक्ति बैठा रहता है, उसका भाग्य भी रुक जाता है | रुका हुआ पानी बदबू देने लगता है, उसमें कीड़े पड़ जाते हैं, परन्तु कल -कल बहती नदियाँ अपने कलेवर में सबकुछ समाते हुए भी निर्मल, स्वच्छ रहते हुए जन समुदाय की प्यास बुझाती हुई उनकी जीवन रेखा बन जाती हैं | जीवन में आगे बढ़ने के लिए ,निरंतर उन्नति के लिए स्वयं को परिस्थिति और काल के अनुसार ढालना पड़ता है | यही जीवन का सत्य है| अपने आपको उन्नत बनाए बिना इस प्रतियोगिता के कठिन दौर में ठहरना, अपना स्थान सुनिश्चित करना कठिन कार्य है | दुनिया तेजी से बदल रही है | समयानुसार नए- नए परिवर्तन हो रहे हैं | विज्ञान और प्रौद्योगिकी अपने नए- नए कलेवर में हमारे समक्ष उपस्थित हो रही है| ऐसे में अपने आपको अद्यतन न करना हमारी भूल होगी| इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ज्ञानोदय विद्यालय ने भी निरंतर अपने आपको समयानुकूल अद्यतन किया है| नई शिक्षा नीति अपने साथ विभिन्न लक्ष्यों को लेकर उपस्थित हुई है | इसे सारे देश में लागू करने के प्रयास हो रहे हैं| हमारे विद्यालय में भी इसके लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया जा रहा है और इसे लागू करने के हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं ताकि हमारे विद्यालय के विद्यार्थियों को उत्कृष्ट शिक्षण प्रदान किया जा सके | हमें सम्पूर्ण विश्वास है कि हमारे प्रयास अपेक्षानुकूल परिणाम देंगे | इसके लिए निरंतर प्रयास जारी हैं | इन प्रयासों को एक उदाहरण से समझा जा सकता है कि गर्मियों में जब आप छुट्टियों का आनंद ले रहे थे, तब हम शिक्षक, विभिन्न कार्यशालाओं के माध्यम से प्रशिक्षित होकर अपने आपको तैयार कर रहे थे ताकि हम अद्यतन हो सकें और आपको अच्छी से अच्छी शिक्षा दी जा सके| इन्हीं निरंतर सामूहिक प्रयासों का परिणाम है कि हमारा विद्यालय ज्ञानोदय, देश के अग्रणी विद्यालयों में अपना स्थान बना चुका है और हम आगे भी सफलता के इस क्रम को जारी रखने के लिए कृत संकल्पित हैं|

सफ़र है तो थकान भी होगी, कभी-कभी मन भी घबराएगा, विचलित होगा किन्तु हमें धैर्य से कदम आगे बढ़ाना है | यदि मोती की चाह है तो समुद्र में गहरे उतरना ही होगा | चाँद को छूना है तो लम्बी छलांग लगानी ही होगी| सफलता सहज नहीं मिलती इसका मूल्य चुकाना पड़ता है | यदि सितारा बनकर विश्व के फलक पर चमकना है तो इसके लिए स्वयं को मिटाना ही होगा | करना ही होगा संघर्ष, बिना रुके, सतत, सफलता मिलने तक | हर हाल में हर कीमत पर - चरैवेति चरैवेति -----|

सुर्ख़ियों में

ज्ञानोदय विद्यालय बना नंबर -१

अत्यंत हर्ष का विषय है कि ज्ञानोदय सर्व मंगल विद्या मंदिर हायर सेकेंडरी स्कूल खुरई को सत्र २०२२-२०२३ के लिए इण्डिया के सर्वश्रेष्ठ विद्यालय के रूप में पुरस्कृत किया गया है|

जुलाई माह की गतिविधियाँ

क्षमा दिवस गतिविधि

दिनांक 08 जुलाई 2023 दिन शनिवार को ज्ञानोदय एस.एम.व्ही.एम. हायर सेकेंडरी स्कूल में प्राथमिक और पूर्व-प्राथमिक छात्रों के लिए क्षमा दिवस गतिविधि आयोजित की गई। इस गतिविधि का उद्देश्य छोटे बच्चों को क्षमा की अवधारणा से परिचित कराना, उनमें सहानुभूति कौशल विकसित करना और कक्षा के भीतर सकारात्मक सामाजिक संपर्क को बढ़ावा देना था।

क्षमा गतिविधि के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार थे-
1.प्राथमिक और पूर्व-प्राथमिक छात्रों को क्षमा की अवधारणा से परिचित कराना।
2. छात्रों को स्वस्थ रिश्ते बनाए रखने में क्षमा का महत्व सिखाना।
3. छात्रों के बीच सहानुभूति और समझ को प्रोत्साहित करना।
4. सकारात्मक संघर्ष समाधान रणनीतियों को बढ़ावा देना।

यह गतिविधि [3-8 वर्ष] आयु वर्ग के प्राथमिक और पूर्व-प्राथमिक छात्रों के साथ आयोजित की गई थी।
शिक्षकों ने छात्रों को यह समझने में मदद करने के लिए चर्चा की सुविधा प्रदान की कि क्षमा कैसे उन्हें बेहतर महसूस करा सकती है और उनके रिश्ते को बेहतर बना सकती है।
इस गतिविधि में छात्र दूसरों को माफ करने और माफी मांगने का अभ्यास करने के लिए रोल-प्ले गतिविधियों में लगे हुए थे।

क्षमा गतिविधि ने छात्रों को क्षमा की अवधारणा और स्वस्थ संबंधों को बनाए रखने में इसके महत्त्व के बारे में जागरूकता हासिल करने में मदद की। छात्रों ने अपने साथियों के प्रति सहानुभूति बढ़ाई, क्योंकि वे दूसरों की गलतियों को समझने लगे और माफ करने के इच्छुक हो गए।

इस गतिविधि ने छात्रों को क्षमा की गहरी समझ विकसित करने में मदद की, जिससे कक्षा के भीतर सामाजिक संपर्क और भावनात्मक कल्याण में सुधार हुआ।
इस गतिविधि की प्रभारी शोभा भरद्वाज थीं

कराटे-डू डेवलपमेन्ट ऑर्गनाइजेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित कराटे बैल्ट परीक्षा सम्पन्न

खुरई। ज्ञानोदय विद्यालय के 86 छात्र/छात्राओं ने कराटे-डू डेवलपमेन्ट ऑर्गनाइजेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित कराटे बैल्ट परीक्षा दी यह परीक्षा सोमवार 24 जुलाई को अमेचर कराते डेवलपमेन्ट एसोसिएशन सागर के तत्वाधान में आयोजित की गई। कराटे एसोसिएशन ऑफ इंडिया के चीफ हेड कोच, विश्वामित्र अवॉर्डी मध्यप्रदेश शासन शिहाँन जयदेव शर्माजी के नेतृत्व में सेन्साई संतोष राठौड़ ने परीक्षा ली। कराटे प्रशिक्षक संदीप अग्रवाल ने बताया कि ज्ञानोदय विद्यालय के छात्र कराटे के विभिन्न बैल्ट के लिये कड़ी मेहनत कर रहे हैं। संस्था प्राचार्य डॉ. अभिनव शुक्लाजी ने बताया कि ज्ञानोदय विद्यालय में इंटरहाउस कराते प्रतियोगिता 26 अगस्त को आयोजित की जाएगी। इस प्रतियोगिता में जो खिलाड़ी अपने अपने आयुवर्ग एवं वजनवर्ग में विजेता होंगे वे ही खिलाड़ी आगामी मध्यप्रदेश राज्यस्तरीय कराते प्रतियोगिता में सागर जिले का प्रतिनिधित्व करेंगे।

चित्र सामान्य से सामान्य ज्ञान’ प्रतियोगिता

ज्ञानोदय विद्यालय में ‘चित्र सामान्य से सामान्य ज्ञान’ प्रतियोगिता 20 जुलाई 2023 को हिंदी के प्राथमिक विभाग द्वारा आयोजित की गयी | जिसमे कक्षा 3 से 5 तक के 45 विद्यार्थियों ने भाग लिया | प्रभारी शिक्षिका द्वारा अंतिम रूप से प्रत्येक कक्षा से 5-5 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिसमें निर्णायक द्वारा प्रत्येक वर्ग से 1 विजेता घोषित किया गया|

प्रत्येक कक्षा से प्रथम विजेताओं के नाम इस प्रकार है - पांचवी (अ) दिव्यांश यादव, पांचवीं (ब) कार्तिकेय शर्मा , चौथी (स) शिव यादव, चौथी (अ) निशांत दांगी, चौथी (ब) हंशिका अहिरवार, चौथी (स) हिमांशी खटीक , तीसरी (अ) लोकेश प्रजापति, तीसरी (ब) आराध्या बघेल , तीसरी (स) आर्जव जैन

इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने स्मार्ट बोर्ड से चित्र देखकर उनके नामों को हिंदी भाषा में लिखने का प्रयास किया | इस गतिविधि का उद्देश्य हिंदी भाषा के प्रति रूचि जागृत करना था| साथ ही प्रतिभागियों को हिंदी में लेखन कौशल, तार्किकता और रचनात्मकता का प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करना था | इस प्रतियोगिता की निर्णायक - श्रीमती कुसुम पटेल एवं प्रभारी सुश्री आयुषी समैया थीं |

कविता पाठ

दिनांक 22 जुलाई 2023 दिन शनिवार को ज्ञानोदय सर्वमंगल विद्या मंदिर में कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । यह प्रतियोगिता कक्षा 5 के सभी छात्रों के लिए आयोजित की गयी थी |प्रत्येक प्रतिभागी को अपनी पसंद की एक कविता चुननी और याद करनी थी। इस गतिविधि का उद्देश्य छात्रों को अपने बोलने और याद करने के कौशल को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करना था। वे सार्वजनिक रूप से बोलने में आत्मविश्वास पैदा कर सकते हैं। प्रतियोगिता का भाग लेने वाले छात्रों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। इस गतिविधि ने उन्हें अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का एक अनूठा अवसर प्रदान किया, जिससे उन्हें अपने विचारों और भावों को व्यक्त करने में आत्मविश्वास हासिल करने में मदद मिली । गतिविधि के माध्यम से, छात्रों ने अपनी चुनी हुई कविताओं को सीखकर और सुनाकर उन्हें याद रखने के कौशल विकसित किए। कक्षा 5 के प्रत्येक अनुभाग से कुल 10 छात्रों का चयन किया गया और प्रतियोगिता के लिए अंतिम रूप से दस प्रतिभागी चुने गए। प्रतियोगिता में - कनिष्का श्रीवास्तव ने प्रथम स्थान, सुश्री जीविका ने द्वितीय स्थान और सानिया जोया खान ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता की प्रभारी सुश्री चंचल पचौरी थीं

जीतने के लिए रोल करें

ज्ञानोदय सर्व मंगल विद्या मंदिर हायर सेकेंडरी स्कूल खुरई मे दिनाँक 31 जुलाई 2023 को "जीतने के लिए रोल करे" गतिविधि का आयोजन किया गया जिसमें कक्षा तीसरी से पांचवी तक के बच्चों ने भाग लिया था। इस गतिविधि की प्रभारी सुश्री नयन सिंघई थी और इस गतिविधि में निर्णायक की भूमिका सुश्री पूजा जैन ने निभाई । इस गतिविधि का उद्देश्य छात्रों में ध्यान एकाग्रता तथा अंकों को जोड़ना और अंकों मे तुलना करना सिखाना था । यह गतिविधि गणित सिखाने का एक नया तरीका है | इसमें ० से ९ तक चोकोर गट्टे बनाकर फर्श पर बेतरतीब क्रम से रख दिए जाते हैं और निश्चित दूरी पर आरंभिक रेखा बना देते है प्रत्येक बच्चा इस रेखा से एक गेंद रोल करता है। गेंद जिस नंबर से होकर जाती है, उस नंबर का जोड़ किया जाता है | ३ गेंद में जितने नंबर आते है ,प्रत्येक छात्र के सामने लिख दिए जाते हैं । जिस छात्र के सबसे ज्यादा अंक आते हैं, वह विजयी होता है। इस गतिविधि से बच्चों में 'साइको मोटर कौशल' का विकास होता है | इस गतिविधि में छात्रों ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया था | इस गतिविधि मे भाग लेने वाले छात्रों के नाम थे –साहिल, कृष्णा ,अन्वी,श्लोक, अनुकृति , तमन्ना |

कक्षा तीसरी से,आरब, निमिष, हंसिका, दिव्य, मृदुल, संस्कृति ,कक्षा चौथी से एवं प्रद्युम्न, मयंक, अभिषेक, सोनक्ष, ओम, मोक्ष कक्षा पांचवी से। इस गतिविधि के विजेता कक्षा ३ स से तमन्ना, कक्षा ४ स से मृदुल, कक्षा ५ स से ओम त्यागी रहे।

अंतरसदनीय काव्य पाठ प्रतियोगिता

27 जुलाई को ज्ञानोदय सर्व मंगल विद्या मंदिर में एक अंतरसदनीय काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया | यह प्रतियोगिता कक्षा 6 से 12 के विद्यार्थियों के लिए आयोजित की गयी थी | इस प्रतियोगिता के लिए कुल 18 बच्चों को प्रशिक्षित किया गया और अंतिम रूप से आठ विद्यार्थियों का चयन किया गया |ये विद्यार्थी थे – टैगोर सदन से रिया ठाकुर कक्षा ९ स ,अनामिका दांगी कक्षा ९ द सरोजिनी सदन से शुभी राजपूत कक्षा ९ इ ,पूनम कुर्मी कक्षा ८ स , विवेकानंद सदन से तरुण जैन कक्षा ८ द ,आस्तिक जैन कक्षा ७ स लक्ष्मी सदन से आयुषी जैन कक्षा ९ ब और पारस जैन कक्षा ७ ब |

इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पारस जैन कक्षा ७ ब ने ,तरुण जैन कक्षा ८ द ने द्वितीय एवं पूनम कुर्मी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया |

प्रतियोगिता का उद्देश्य अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करना एवं हिंदी साहित्य की प्रमुख विधा कविता के प्रति रूचि जागृत करना था |

प्रतियोगिता में संचालन का उत्तरदायित्त्व फिजा खान कक्षा ११ ब एवं ऋषिका श्रीवास्तव कक्षा ११ ब ने निभाया |इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य डॉ अभिनव शुक्ला ने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें अच्छे काव्य पाठ के लिए कुछ सूत्र बताए |

प्रतियोगिता में निर्णायक थे श्री अखिलेश जैन एवं श्री जितेन्द्र तिवारी |डॉ संजय तिवारी एवं डॉ कीर्तिवर्धन श्रीवास्तव इस कार्यक्रम के प्रभारी थे |

हुला- हूप्स गतिविधि

दिनांक 19 जुलाई 2023, दिन बुधवार को ज्ञानोदय सर्व मंगल विद्या मंदिर में हुला- हूप्स गतिविधि का आयोजन किया गया | इस गतिविधि को तीन भागों में बाँटा गया था-(i) नर्सरी कक्षा- हुला हूप कूद (ii) यू.के.जी कक्षा- हुला हूप्स के साथ दौड़ (iii) एल.के.जी कक्षा- संगीतमय हुला हूप्स |

इस गतिविधि का उद्देश्य छात्रों को शारीरिक व्यायाम में संलग्न करना, उनके समन्वय कौशल को विकसित करना, टीम वर्क और सामाजिक संपर्क को बढ़ावा देना था। प्राथमिक छात्रों के लिए हुला हूप्स गतिविधियों का दायरा चंचल और मनोरंजक खेलों और चुनौतियों में शामिल होकर एक मजेदार और आनंददायक अनुभव प्रदान करना है| छात्र शारीरिक गतिविधियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं और ऐसा करते समय अच्छा समय बिता सकते हैं। जैसे-जैसे छात्र नए हुला-हूप्स कौशल सीखते हैं और अपनी क्षमताओं में सुधार करते हैं, उनमें उपलब्धि की भावना आती है, जिससे उनका आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान बढ़ता है। अंतिम उद्देश्य छात्रों को सफल होने और उनकी उपलब्धियों पर गर्व महसूस करने के अवसर प्रदान करना है। हुला हूप्स गतिविधि के छात्रों पर कई प्रभाव और परिणाम हो सकते हैं जैसे -शारीरिक फिटनेस, मोटर कौशल विकास. एकाग्रता और फोकस.तनाव से राहत, सामाजिक संपर्क, आत्म-अभिव्यक्ति. मौज-मस्ती और आनंद|

इस गतिविधि की प्रभारी शिक्षक श्रीमती कविता शर्मा और कु. आर्ची अग्रवाल थीं |

मैं अपनी इंद्रियों को जानता हूँ - प्रश्नोत्तरी

दिनांक-29 जुलाई 2023 दिन-शनिवार को नर्सरी से दूसरी कक्षा तक के छात्रों की पांच इंद्रियों की समझ और ज्ञान का आकलन करने के लिए "आई नो माई सेंसेज क्विज" का आयोजन किया गया था। यह जानकारीपूर्ण रिपोर्ट प्रश्नोत्तरी के उद्देश्य, इसके प्रारूप, मुख्य निष्कर्षों और आगे के सुधार के लिए सिफारिशों की रूपरेखा तैयार करती है।

प्रश्नोत्तरी का मुख्य उद्देश्य यह मूल्यांकन करना था कि छात्र पाँच इंद्रियों, अर्थात् दृष्टि, श्रवण, स्वाद, गंध और स्पर्श को कितनी अच्छी तरह समझते हैं। इस गतिविधि के द्वारा छात्र पांच इंद्रियों (दृष्टि, श्रवण, स्वाद, स्पर्श और गंध) को सही ढंग से नाम देने और उनके महत्व को समझने में सक्षम होंगे। छात्र प्रत्येक इंद्रिय की प्राथमिक भूमिका को समझेंगे और यह उनके आसपास की दुनिया की समग्र धारणा और समझ को विकसित करने में मदद करेगा।

इस गतिविधि द्वारा छात्र दैनिक गतिविधियों, संचार और सुरक्षा में अपनी इंद्रियों के महत्व की सराहना करना सीखेंगे।

छात्र इंद्रियों की अपनी समझ को वास्तविक जीवन की स्थितियों से जोड़ने में सक्षम होंगे और प्रदर्शित करेंगे कि प्रत्येक इंद्रिय का उपयोग कैसे किया जाता है।

ज्ञान में वृद्धि: प्रश्नोत्तरी छात्रों को पांच इंद्रियों के बारे में ज्ञान का एक ठोस आधार प्रदान करेगी, जिससे वे प्रत्येक इंद्रिय को पहचानने, समझने और उसका सटीक वर्णन करने में सक्षम होंगे। बेहतर आलोचनात्मक सोच कौशल: छात्र अपनी आलोचनात्मक सोच क्षमताओं को बढ़ाएंगे क्योंकि वे इंद्रियों के अपने ज्ञान को व्यावहारिक स्थितियों या परिदृश्यों पर लागू करेंगे।

इस गतिविधि की प्रभारी शिक्षक श्री मती मनप्रीत सलूजा एवं अंजलि कुर्मी थीं|

कारगिल विजय दिवस पर नृत्य प्रदर्शन द्वारा श्रद्धांजलि

दिनांक २६ जुलाई २०२३ को ज्ञानोदय सर्वमंगल विद्या मंदिर हायर से.स्कूल के नायकन हॉल में कारगिल विजय दिवस के अवसर पर, कारगिल युद्ध के दौरान लड़ने वाले बहादुर सैनिकों को श्रद्धांजलि देने के लिए एक नृत्य प्रदर्शन का आयोजन किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य उनके बलिदानों को याद करना और उनकी अदम्य भावना का सम्मान करना था। नृत्य प्रदर्शन में युद्ध से संबंधित विभिन्न भावनाओं और कहानियों को प्रदर्शित किया गया, जिसमें भारतीय सशस्त्र बलों की वीरता और देशभक्ति पर प्रकाश डाला गया। नृत्य प्रदर्शन की तैयारी महीने के पहले दिन से शुरू हो गई थी। छात्र नृत्य के माध्यम से अपना आभार व्यक्त करने के लिए उत्साहित थे। प्रदर्शन में तालमेल और पूर्णता सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से रिहर्सल आयोजित की गईं।

इसी क्रम में दिनांक: 28 जुलाई, 2023 को भरतनाट्यम और कथक नृत्य प्रदर्शन गतिविधि का आयोजन किया गया | यह गतिविधि रिपोर्ट नायकन हॉल में हुए हालिया भरतनाट्यम और कथक नृत्य प्रदर्शन का एक सिंहावलोकन प्रदान करती है। भरतनाट्यम और कथक दोनों शास्त्रीय भारतीय नृत्य रूप हैं जिनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है और वे अपने जटिल फुटवर्क, अभिव्यंजक हावभाव और लयबद्ध गतिविधियों के लिए जाने जाते हैं।

इस प्रदर्शन में समूह रचनाएँ शामिल थीं, जो नर्तकियों की तकनीकी सटीकता और सिंक्रनाइज़ेशन पर प्रकाश डालती थीं। जीवंत वेशभूषा, जटिल हाथ के इशारे और लयबद्ध पदयात्रा ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया और भरतनाट्यम और कथक की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की झलक दिखाई।

इस गति विधि में हिमांशु जैन कक्षा ७ अ ,काव्या पाठक ७ ब ,खनक दांगी ७ ब ,कनिष्का श्रीवास्तव 5 स ,रिद्धि ठाकुर ९ द ,ख्याति समैया ९ द ,वैभव विश्वकर्मा ९ ,मुक्ति जैन ८ अ ,देव शर्मा ८ अ ,यथार्थ सोनी ९ इ ,श्रुति मिश्र ७ स नैना जैन ४ ब ,सृजन शर्मा ४ ब खनक साहू 5 ब ,वैष्णवी परिहार ७ स ,हर्षिता दांगी 5 ब ,परिधि जैन ६ स ,शेफाली जैन ११ अ ,स्मृति ठाकुर ११ स ,भुवनेश्वरी राजपूत ११ स ने भाग लिया |
कार्यक्रम की प्रभारी सुश्री प्रियंका विश्वास थीं |

कहानी सुनाओ प्रतियोगिता

दिनांक 29 जुलाई 2023 दिन शनिवार को ज्ञानोदय सर्व मंगल विद्या मंदिर में कहानी सुनाओ गतिविधि का आयोजन किया गया | इस गतिविधि में अलग अलग नैतिकता वाली चार अलग-अलग कहानियां चुनी गयीं ताकि बच्चों को भाषा संवर्धन के साथ-साथ हर विधा के कार्यक्रम कैसे संचालित करने हैं, इसकी जानकारी मिले और साथ ही कार्यक्रम को व्यवस्थित चलाने की आदत भी विकसित हो। इस कार्यक्रम की प्रभारी सुश्री सांत्वना दास थीं|

साहित्यिकी
विद्यार्थी कोना

हमारे गुरु

इस संसार में जितने भी गुरु हैं , सभी गुरूओं को मेरा सादर प्रणाम |हमारे भारत देश में जिस तरह हर त्योहार बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है,उसी तरह गुरु का त्योहार गुरु पूर्णिमा भी बड़े धूमधाम से मनाया जाता है |गुरु अर्थात वह व्यक्ति जो इंसान को अंधकार से उजाले की ओर ले जाता है| गुरु हमारे जीवन में अहम् भूमिका निभाते हैं | हर व्यक्ति के जीवन में प्रथम गुरु उसके माता पिता होते हैं |गुरु हमेशा अपने शिष्य को अपने से आगे देखना चाहता है |गुरु ही वह व्यक्ति होता है जो अच्छे बुरे का बोध करता है |अच्छे बुरे में साथ देता है | गुरु उस कुम्हार की तरह होता है जो सुडोल घड़ा बनाने के लिए ऊपर से चोट तो करता है लेकिन नीचे से हाथ भी लगा लेता है |इसी प्रकार गुरु अपने शिष्य को पहले डांटता है लेकिन उसे प्रेम भी करता है और अंत में उसे श्रेष्ठ बना देता है |

हमें हमेशा गुरूओं का आदर सम्मान करना चाहिए |अब हम गुरु की तुलना उस चींटी से करेंगे जो कभी गुड़ में लिपटी रहती और उसे कभी नहीं छोड़ती चाहे मर जाए | उसी प्रकार गुरु भी अपने शिष्य का हाथ कभी नहीं छोड़ता | अगर किसी व्यक्ति का गुरु हाथ पकड़ ले तो वह अपने जीवन में अवश्य सफल होगा | हम व्यक्ति के जीवन में गुरु की भूमिका अहम् होती है | गुरु शिष्य को सही अर्थों में जीवन जीना सिखाता है | गुरु कोई भी हो सकता है चाहे वह उम्र में छोटा हो या बड़ा | हर शिष्य को अपने जीवन में गुरु की जरूरत अवश्य होती है |आओ हम भी एक श्रेष्ठ गुरु का चयन कर उसके बताए मार्ग पर चलकर अपने जीवन को कृतार्थ करें |

-अमन जैन कक्षा १२ द

विश्वास

तुम्हारे सारे सपने तुमको मिलेंगे,
एक दिन यहां पर भी फूल खिलेंगे।
नामुमकिन कुछ भी नहीं,
इस पूरे संसार में।
जो चाहे वो कर सकता है,
अगर आत्मविश्वास हो इंसान में।
इच्छाशक्ति तुम जगाओ,
कुछ करने की हिम्मत दिखाओ।
यश मिलेगा तुमको इस संसार में,
जो चाहे वो कर सकता है,
अगर आत्मविश्वास हो इंसान में।

मान्या सिंह विसेन कक्षा ७ स

वीर

वीर वही होता है
जो कभी नहीं डरता
करता
सबकी रक्षा
वीर हो तात्या टोपे जैसा
जो करता
मरते दम तक
देश की रक्षा
तुम भी करो
देश की सेवा
और बोलो
जय हिन्द जय भारत |

हर्षित व्यास कक्षा ७ स

"पेड़"

मैं हूँ पेड़
मत काटना मुझे
टुकड़ों टुकड़ों में कभी
मत बाँटना मुझे
दर्द तुम्हें ही नहीं
मुझे भी होता है
मन तुम्हारा ही नहीं
मेरा भी रोता है
मैं तो तुम्हारा मित्र हूँ
मैं अपने फल स्वयं नहीं खाता
सब तुम सबको दे देता हूँ
खड़ा रहता हूँ तुम्हें धूप से बचाने
फिर भी तुम मुझे काटते हो
क्या उपकार का फल यही है ?

-ओम दांगी कक्षा पांचवी 'स'

बरसात

रिमझिम करती आई बरसात
झूम रहा है तन-मन, झूमे कण कण
रिमझिम के गीत लेकर आयी है बरसात
फूलों पे यौवन, महका है सुबह और शाम
रिमझिम के गीत लेकर आयी है बरसात
टिप-टिप की आवाजें जैसी मुरली की तान
रिमझिम के गीत लेकर आयी है बरसात
मन पर पे छाया है बरसात का खुमार
रिमझिम के गीत लेकर आयी है बरसात

-आर्जव जैन समैया
कक्षा तीसरी-स

अब हँसने की बारी

अध्यापक – बच्चों आलस्य हमारा दुश्मन है | हमें आलस्य से दूर रहना चाहिए |
छात्र - पर सर आप ही तो कहते थे कि दुश्मन को भी गले से लगाना चाहिए |
अध्यापक – बताओ हमें लड़ाई क्यों नहीं करना चाहिए ?
छात्र – क्योंकि लड़ाई करने से इतिहास बनता है जिसे परीक्षा के लिए याद करना कठिन होता है |
आर्या जैन कक्षा ७ अ

शिक्षिका – एक तरफ पैसा ,दूसरी तरफ अक्ल| क्या चुनोगे?
विद्यार्थी – पैसा
शिक्षिका – ग़लत ,मैं अक्ल चुनती |
विद्यार्थी- आप सही कह रही हो मैडम |जिसके पास जिस चीज की कमी होती है ,वह वही चुनता है |
रितिका जैन -७ अ

शिक्षक कोना

पहेलियाँ

१ मेरे नाम के दो हैं मतलब
दोनों के है अर्थ निराले
एक अर्थ में सब्जी हूँ मैं
एक अर्थ में पालने वाला
२ मुझ में भार सदा ही रहता
जगह घेरना मुझको आता
हर वस्तु से गहरा रिश्ता
हर जगह मैं पाया जाता
३ तीन अक्षर का मेरा नाम
उल्टा सीधा एक समान
४ दुम कटे तो सीता
शीश कटे तो मित्र
बीच कटे तो खोपड़ी
पहेली बड़ी विचित्र
५ गर्मी सहती ,वर्षा सहती
देती हूँ सबको आराम
सर्दी में मैं काम न आती
बतलाओ तो मेरा नाम

उत्तर -१ पालक २. गैस ३. जहाज ४.सियार ५. छतरी
संग्रह – श्री प्रशांत दिवाकर [संस्कृत शिक्षक]

तुक मिलाएँ परिधान बताएँ

1.लेना है जनता से वोट
गांधीजी पहने है.....
2. खातेहै बैगन का भुर्ता
लालाजी पहने है......
3.जो बच्ची आई टी फर्स्ट
पहनी है उसने.......
4.रखता बिस्कुटके पैकेट
जब भी वो पहने.....
5.आया दुल्हा लेकर गाड़ी
दुल्हन ने पहनी थी.......
6.कीमत में था काफ़ी महंगा
दुल्हन ने पहना था......
7.नन्हीं लड़की नाम है गोपी
सिर पर पहने सुंदर......
8.इतना जमकर खेली होली
भीग गई रंगों से.......
9.झलक रही थी खूब तमीज
पहने था वो साफ़......
10.लेकर आई नन्हीं पोती
दादाजी की लंबी......

सुश्री आयुषी समैया (शिक्षिका)
[उत्तर – अगले अंक में]

मैं किसान हूँ

मैं किसान हूँ....
मैं प्रकृति के साथ रहता हूँ और प्रकृति से प्रेम करता हूँ
मेरे दिन की शुरुआत उगते सूरज और पक्षियों की चहचहाहट से होती है
मेरे साल की शुरुआत बैसाखी से होती है
काले बादल आशा भरते हैं
पहला स्नान मेरे सपने को संजोता है
मिट्टी की खुशबू मेरे लिए सुगंध है
धरती...आसमान और मैदान का मिला जुला रंग मुझे रंगीन बनाता है
जानवरों और कीड़ों का संगीत मेरे दिल की लय है
हरे-भरे खेत....सुनहरी फसलें....फूलों की महक मेरी उपलब्धि है
धरती माँ के लिए पसीने की बूंद मेरे फूल है
मैं वर्षा रहित अगस्त...सफ़ेद बादलों को सहन करता हूँ
मैं जानवरों से प्यार करता हूँ ....
मैं क्षितिज में सुंदरता देखता हूँ
मुझे बाढ़ के पानी में ठंडक महसूस होती है
मिट्टी पर मेरे पैरों के निशान प्राकृतिक पेंट हैं
मैं अपनी धरती को किसी और से ज्यादा प्यार करता हूँ।
-श्री निराकार पटनायक शिक्षक

सुहाना बचपन

साथ छलक रहा था सुहाना बचपन,
खुशियों भरी थी जीवन की भटकन।
छोटे छोटे सपनों से भरी हर घड़ी,
बना देती थी हर पल को सुनहरी।

माँ की कंचन सी कोमल हंसी,
बाप के प्यार में भरी हुई थी मस्ती।
दोस्तों की गलियों में बंधी थी चांदनी,
खेलती रही थी हर रोज़ मस्त मस्ती।

बचपन की यादें हैं प्यारी मेरे दिल को,
नगमों से सजी हैं जीवन की रेखाएँ।
हर चीज़ थी पवित्र और अनमोल,
सुहानी सी नींदों में मिलती थी आशाएँ।

नादियों के किनारों में खेल खेलते,
हर रोज़ बनती थी नई सहेलियां।
पेड़ों की छाँव में झूला झूलने जाते,
सभी एक साथ बिताते थे मस्त पलों को।

सुबह की ठंडी रोशनी और खुशबू,
आसमान पे उड़ान भरा करती थी हँसी।
पाठशाला की घंटी थीं धड़कन मेरी,
उम्मीदों की फुलझड़ी लगी होती।

सुहाना वो बचपन था या सपना,
अब इन यादों में ही जी रही हूँ।
यादों में ही गुम हुई हैं दोस्तों की बातें,
सुहाने वो मजेदार खेल।

फिर से जीना चाहती हूं,वो सुहाना बचपन,
जहां हर रोज़ थी नई कहानी की शुरुआत ।
फिर से जीना चाहती हूं,वो सुहाना बचपन,
जहां हर रोज़ थी नई कहानी की शुरुआत ।

श्रीमती मनप्रीत सलूजा
कनिष्ठ अध्यापिका

।। मृत्यु से भय कैसा ।।
।। श्रीमद् भागवत पुराण कथा का सार तत्व।।

।। मंगलाचरण।।

न तातो न माता न बंधु: दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी॥

राजा।परीक्षित को श्रीमद भागवत पुराण सुनाते हुए जब शुखदेव जी महाराज के ६ दिन बीत गए और तक्षक (सर्प) के काटने से राजा परीक्षित की मृत्यु होने का एक दिन शेष रह गया, तब भी राजा परीक्षित शोक और मृत्यु का भय दूर नहीं हुआ,,,,,,,,।।
अपनी मृत्यु का समय निकट आता देखकर राजा का मन क्षुब्ध हो रहा था। तब शुखदेव जी महाराज ने परीक्षित को एक कथा सुनाना प्रारंभ किया,,,,।
हे राजन बहुत समय पहले की बात है एक राजा किसी जंगल में शिकार खेलने गया था। संयोगवश वह रास्ता भूल कर बड़े घने जंगल में जा पहुंचा।
 राजा को रास्ता ढूंढते-ढूंढते रात्रि हो गई और उसी समय तेजी से वर्षा होने लगी। जंगल में शेर बाघ आदि जानवर बोलने लगे वह राजा बहुत भयभीत हो गया और किसी प्रकार से रात्रि बिताने के लिए विश्राम करने का स्थान ढूढ़ने लगा।
रात के समय में अंधेरा होने के कारण से राजा को एक दीपक दिखाई दिया। वहाँ पहुंचकर एक गंदे बहेलिए की झोपड़ी दिखाई दी। वह बहेलिया ज्यादा चल फिर नहीं सकता था। इसलिए झोपड़ी में ही एक ओर उसने मल मूत्र त्यागने का स्थान बना रखा था। अपने खाने के लिए जानवरों का मांस उसने झोपड़ी की छत पर लटका रखा था। बड़ी गंदी, छोटी, अंधेरी झोपड़ी और दुर्गंध युक्त वह झोपड़ी थी।
उस झोपड़ी को देखकर पहले तो राजा रुक गया। लेकिन पीछे उसे सिर छुपाने का कोई और आश्रय ना दिखाई दिया। इसलिए उस बहेलिए से अपनी झोपड़ी में रहने के लिए प्रार्थना की।
बहेलिए ने कहा कि आश्रय के लोभी राहगीर कभी-कभी यहाँ आ भटकते हैं। मैं उन्हें ठहरा तो लेता हूँ। लेकिन दूसरे दिन जाते समय वह बहुत झंझट करते हैं। इस झोपड़ी की गंध उन्हें ऐसी भा जाती है के फिर वह उसे छोड़ना ही नहीं चाहते है और इसी में ही रहने की कोशिश करते हैं इस प्रकार से वो अपना कब्जा जमाते हैं। ऐसे झंझट में मैं कई बार फंस चुका हूँ। इसलिए अब मैं किसी को भी यहाँ ठहरने नहीं देता हूँ। मैं आपको भी इसमें ठहरने नहीं दूंगा। राजा ने प्रतिज्ञा की कि वह इस झोपड़ी को सुबहअवश्य ही खाली कर देगा। राजा का कामकाज तो बहुत बड़ा होता ही है।

संयोगवश वह भटकते हुए आ गया। सिर्फ एक रात्रि ही काटनी थी।
बहेलिए ने राजा को ठहरने की अनुमति प्रदान कर दी।
परंतु सुबह होते ही झोपड़ी खाली कर देने की बात फिर से दोहरा दी।
राजा रात भर एक कोने में पड़ा सोता रहा। सोते समय राजा के मस्तिष्क में झोपड़ी की दुर्गंध इस प्रकार बस गई जब राजा प्रातः काल शयन करके उठा तो राजा को वह दुर्गंध परमप्रिय लगने लगी। अपने जीवन का वास्तविक लक्ष्य भूल कर के राजा वहाँ रहने की सोचने लगा।
वह वहाँ पर ठहरने के लिए बहेलिए से प्रार्थना करने लगा। इस पर बहेलिया भड़क गया और बुरा भला कहने लगा। इस प्रकार राजा और बहेलिए का आपस में विवाद शुरू हो गया।
राजा को वह जगह छोड़ना अब झंझट लगने लगा और और दोनों को उस स्थान को लेकर के बड़ा विवाद खड़ा हो गया।
कथा सुनाकर शुखदेव जी ने महाराज राजा परीक्षित से पूछा, परीक्षित ! बताओ, उस राजा का उसी स्थान पर सदा रहने के लिए झंझट करना उचित था?
परीक्षित ने उत्तर दिया, "भगवन ! वह कौन राजा था।उसका नाम तो बताइए? वह तो बड़ा भारी मूर्ख जान पड़ता है, जो ऐसी गंदी झोपड़ी में, अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर एवं अपना वास्तविक उद्देश्य भूलकर, नियत अवधि से भी अधिक रहना चाहता है। उसकी मूर्खता पर तो मुझे आश्चर्य होता है।
श्री सुखदेव जी महाराज ने कहा, "हे राजा परीक्षित !
वह बड़े भारी सबसे मूर्ख तो स्वयं आप ही हैं। इस मल- मूत्र की गठरी देह (शरीर) में जितने समय आपकी आत्मा को रहना आवश्यक था, वह अवधि तो कल समाप्त हो रही है। अब आपको उस लोक जाना है, जहां से आप आए हैं। फिर भी आप झंझट फैला रहे हैं, और मरना नहीं चाहते। क्या यह आपकी मूर्खता नहीं है? राजा परीक्षित का ज्ञान जाग पड़ा और वह बंधन मुक्ति के लिए सहर्ष तैयार हो गए। वास्तव में यही सत्य है। जब एक जीव अपनी मां के गर्भ से जन्म लेता है, तो अपनी मां के गर्भ के अंदर भगवान से प्रार्थना करता है कि हे भगवान! मुझे यहां (इस गर्भ) से मुक्त कीजिए मैं आपका भजन सुमिरन ध्यान करूँगा। और वह जन्म लेकर इस संसार में आता है।तो (उस राजा की तरह हैरान होकर) सोचने लगता है कि मैं यहाँ कहाँ आ गया(और पैदा होते ही रोने लगता है)

फिर उस गंध से भरी झोपड़ी की तरह उसे यहां की खुशबू ऐसे भा जाती है कि वह अपना वास्तविक उद्देश्य भूल कर यहां से जाना ही नहीं चाहता है।

।। यही मेरी कथा है और आपकी ।।

-श्री जितेन्द्र तिवारी संस्कृत शिक्षक

ज्ञानेन पुंसां सकलार्थ सिद्धि :

संपादक संरक्षक - प्राचार्य,
ज्ञानोदय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खुरई

मुख्य संपादक - डॉ. कीर्तिवर्धन श्रीवास्तव

सह संपादक - सुश्री आयुषी समैया

सहयोग - हिंदी विभाग

तकनीकी सहायता - श्री विशाल कटारे एवं तकनीकी विभाग

छायांकन - श्री प्रशांत सील एवं विद्यार्थी

www.facebook.com/gyanodayakhurai
gyanodayaprincipal@gmail.com
www.gyanodayakhurai.org
youtube.com/UC_7RhrC1nipjZTanSKoEVEA
gyanodayakhurai/9826829441
gyanodayacampuscare.in
Gyanodaya khurai
9826829441, 07581-292149,292154

अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु क्यू आर को स्केन करें|

ज्ञानोदय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खुरई, सागर (म.प्र.)